कला समेकित अधिगम द्वारा इतिहास शिक्षण का माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की रूचि, अभिवृत्ति एवं अवधारण पर प्रभाव का अध्ययन

पीएच.डी. (शिक्षाशास्त्र) उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु

दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनीवर्सिटी) दयालबाग,आगरा

को प्रस्तावित

शोध प्रबन्ध की रूपरेखा

2020

शोध निर्देशिका

डॉ0 सोना दीक्षित

शोधार्थिनी

अपराजिता यादव

डिपार्टमेंट ऑफ फाउंडेशन ऑफ एजुकेशन, शिक्षा संकाय

दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनीवर्सिटी)

दयालबाग, आगरा – 282005

प्रस्तावना

शिक्षा बालक को एक संस्कारवान व चेतनशील प्राणी बनाती है। यही बालक देश का भविष्य होते है और शिक्षा किसी भी देश की बुनियाद होती है। वर्तमान समय में किसी विद्यालय समाज व राष्ट्र को उन्नति के शिखर पर ले जाने के लिए वहाँ की शिक्षा का विकास आवश्यक है। सुप्रसिद्ध शिक्षाविद **जैकस डेलर्स** की अध्यक्षता में गठित "21वीं सदी में शिक्षा" का अंतर्राष्ट्रीय आयोग जिसकी रिपोर्ट "लर्निंग द ट्रेजर विद इन" शीर्षक से यूनेस्को द्वारा 1996 में प्रकाशित किया गया। जिसमें शिक्षा के निम्न चार आधार स्तम्भ बताये गये जो निम्न है–

1. ज्ञान के लिए सीखना
2. करने के लिए सीखना
3. होने के लिए सीखना
4. साथ रहने के लिए सीखना

यूनेस्को द्वारा प्रकाशित यह रिपोर्ट एक क्रान्तिकारी रिपोर्ट है जिसने सम्पूर्ण विश्व की शिक्षा व्यवस्था में क्रान्तिकारी परिवर्तन कर दिया। इसके चार स्तंभों में से दो स्तंभ "होने के लिए सीखना एवं 'साथ रहने के लिए सीखना' शिक्षा में कलाओं के उपयोग का एक सशक्त माध्यम है। अपना अस्तित्व बनाये रखने के लिए जीवन में स्वतन्त्रता एवं आनंद का महत्वपूर्ण स्थान है जो विभिन्न कलाओं के मध्य से सहज प्राप्य हो सकती है। अतः शिक्षा के इस उद्‌देश्य की पूर्ति हेतु कला शिक्षा एक प्रमुख साधन हो सकती है। साथ ही, साथ रहने के लिए सीखना अर्थात दूसरों की समझ विकसित करना, अन्य व्यक्तियों से प्रभावी सम्प्रेषण, समाज को समझना, समाज के नियम कायदे और रीति रिवाज आदि को समझने के लिए विभिन्न कलाएं एक सशक्त माध्यम हो सकती है। कला विभिन्न अंतर्द्वन्द्वों का उद्‌घाटन एवं आनंद की प्राप्ति का स्त्रोत है। शिक्षा के इन्हीं उद्‌देश्यों की प्राप्ति सम्पूर्ण विश्व में कला शिक्षण पर बल दिया जा रहा है।

किसी भी समाज की उन्नति का पैमाना उस समाज का सांस्कृतिक परिदृश्य ही माना जाता है। सांस्कृतिक परिदृश्य वास्तव में मानसिक जगत के उन्नयन का ही दर्पण होता है। मनुष्य ने स्वयं की भावनाओं, अनुभूतियों, संवेदनाओं और अनुभवों को संगीत, चित्र या अभिनय के रूप में अभिव्यक्ति दी। यह संविदित अभिवयिक्तयाँ जब इतिहास के रूप में संकलित की जाती है तो यह संकलन सांस्कृतिक विकास का क्रमबद्ध एवं चेतन इतिहास बनकर सामने आता है। ज्ञान कई माध्यमों से प्राप्त होता है। प्रकृति ज्ञान का प्रथम स्त्रोत मानी जाती है। प्रकृति की घटनाएँ, दैनिक क्रियाएँ, परिवर्तन सभी मानव को कुछ न कुछ ज्ञान देते हैं। यही से दृश्य एवं प्रदर्शन कला की भूमिका का प्रारम्भ होता है। कला एवं शिल्प वास्तव में शिक्षा का अत्यन्त व्यवहारिक पक्ष है। हम सभी इस तथ्य से परिचित है कि इतिहास के विद्यार्थी को ऐतिहासिक स्थलों की यात्रा इसलिए कराई जाती है ताकि वे उन स्थलों का प्रमाण मानकर इतिहास को समझ सके। लगभग यही कार्य हमारी कला भी करती है।

कला से तात्पर्य विचारों, अनुभवों, भावनाओं की संगीत चित्र, भाषा मुद्रा, गति एवं भाव भंगिमाओं के माध्यम से सुनियोजित अभिव्यक्ति है। कलाएं बच्चे को संवेदी, भावनात्मक बौद्धिक एवं रचनात्मक रूप से समृद्ध करती है और इसके सर्वांगीण विकास में मदद करती है। सुप्रसिद्ध प्रयोजनवादी शैक्षिक दार्शनिक जॉन डीवी (1906) के अनुसार, "कोई व्यक्ति क्या कर रहा है, इसका अनुभव करना एवं उस अनुभव का आनंद उठाना, उस संगामी अन्तर्जीवन की प्रक्रिया के एक पक्ष में खो जाना और सामग्री सन्दर्भों का तदनुसार सुनियोजित विकास करना ही कला है।"

कला समेकित अधिगम अनुभवात्मक अधिगम की एक ऐसी रूपरेखा है जो सभी विद्यार्थियों के अपने अभिगम बिन्दुओं के माध्यम से सीखने का एक समान वातावरण प्रदान करती है। कला समेकित अधिगम की परिकल्पना ऐसे शिक्षण शास्त्र के रूप में की गयी है जो विद्यालयी शिक्षा के सभी स्तरों पर लागू होता है। जिसका उद्देश्य विद्यार्थी के संज्ञानात्मक, भावनात्मक और मनोगत्यात्मक ज्ञानक्षेत्रों का विकास करना है। बच्चे स्वभाविक रूप से उत्सुक होते है। वे वस्तुओं के साथ खेलना पसंद करते है। संगीत, लय और रंग उन्हें आकर्षित करते है। लगभग जन्म के समय से ही वे प्रकाश, ध्वनि, लय, गति, छाया आकार और रंगों के परस्पर खेल से आनन्दित होते हैं। दिन प्रतिदिन के अनेक दृश्यात्मक और स्पर्शात्मक अनुभव बच्चों के समग्र विकास में सहायता करते हैं। इससे उनकी प्रयोग करने की प्रवृत्ति और वैज्ञानिक स्वभाव की झलक मिलती है। वे लकड़ियों या कंकड़ों से वर्ग, रेखाएं और वृत्त जैसे आकार बनाते हैं जिससे उनके गणितीय अवधारणाओं की ओर झुकाव का संकेत मिलता है। छोटे बच्चों के लिए आड़ी–तिरछी लकीरे खींचना या चीजों का संग्रह करना उनके नैसर्गिक स्वभाव का पहला प्रकटीकरण होता है। यदि उन्हें उनकी कलाकृतियों का वर्णन करने का अवसर दिया जाये तो समझ में आता है कि उनके पीछे कितनी विस्तृत सोच और कल्पनाशीलता छिपी है। कला का प्रयोग करने से बच्चे अपने आस–पास के वातावरण से जुड़ते हैं और उनके विविधतापूर्ण परिप्रेक्ष्यों और दृष्टिकोणों का विकास भी होता है कला के उपयोग से विद्यार्थी बिना किसी बाधा के अवलोकन करने, अन्वेषण करने, सोचने और सीखने में सक्षम बन पाते हैं।

कला समेकित अधिगम सीखने–सिखाने का एक मॉडल है जो 'कलाओं के माध्यम से और कलाओं के साथ' सीखने का एक तरीका है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जहाँ कला सीखने–सिखने का माध्यम बन जाती है। कला समेकित अधिगम द्वारा विद्यार्थी विभिन्न कला रूपों के माध्यम से विभिन्न अवधारणाओं के बीच सृजनात्मक रूप से सम्बन्ध बनाते हैं। दृश्य कला व प्रदर्शन कला दोनों के अनुभव, बच्चों को विभिन्न अवधारणाओं की बेहतर समझ और ज्ञान के सृजन की ओर ले जाते हैं।

भूतकाल में घटित घटनाओं का वर्णन अर्थात जो घटनाएँ या गतिविधियाँ पहले हो चुकी है, उनका प्रस्तुतीकरण ही इतिहास है। हैनरी जॉनसन (1989) ने इतिहास शिक्षण के महत्व पर विशेष प्रकाश डालते हुए कहा है कि "इतिहास शिक्षण के माध्यम से धर्म, नैतिकता, जीवन के आदर्श, सामाजिक मूल्य और बहुत सी अन्य बातों की शिक्षा दी जाती है।" सम्पूर्ण विश्व में भारत का अपनी गौरवशाली संस्कृति और इतिहास के कारण अद्वितीय स्थान रहा है। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में

शिक्षा का विकास मूल आधार है। जिसके द्वारा छात्र–छात्राओं का विकास उसके ज्ञान एवं कला कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार परिवर्तन कर उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है।

'राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद' (1961) ने इतिहास शिक्षण के उद्देश्यों को निम्न रूप में प्रस्तुत किया है–

चित्र न. 1: इतिहास शिक्षण के उद्देश्य

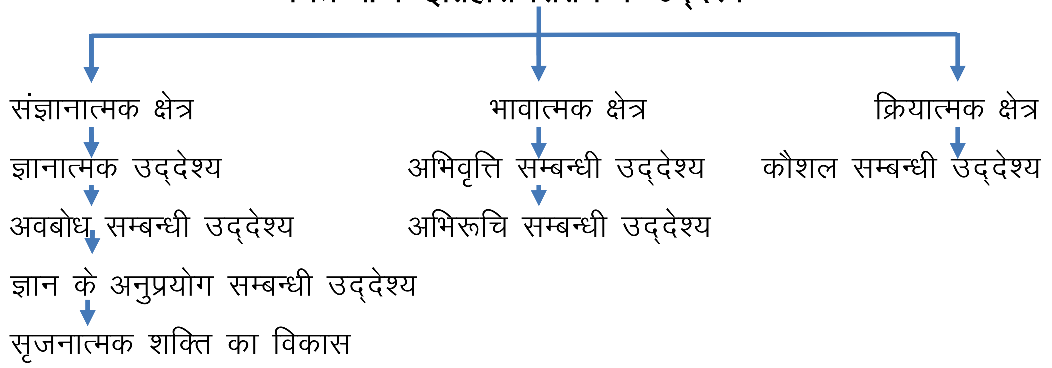

इतिहास शिक्षण का उद्देश्य विद्यार्थी के संज्ञानात्मक क्षेत्र, भावनात्मक क्षेत्र तथा क्रियात्मक क्षेत्र का विकास करना है जो कला समेकित अधिगम द्वारा ही संभव है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) में कहा गया है – "शिक्षा के माध्यम के रूप में कला का प्रयोग विद्यालयों में विभिन्न विषयों के शिक्षण अधिगम के रूप में किया जाना चाहिए।"

समस्या का प्रादुर्भाव

किसी भी देश व संस्कृति की आधारशिला शिक्षा होती है। सभी के लिए जीवन में आगे बढ़ने और सफलता प्राप्त करने के लिए बेहतर शिक्षा बहुत जरूरी है। कला के माध्यम से सीखने का लक्ष्य विद्यार्थी की संज्ञानात्मक (सोच, स्मरण और चिंतन) संवेदात्मक (सामाजिक और भावनात्मक) और मनो–गत्यात्मक (शरीर और गति–चाल का उपयोग) क्षमताओं का विकास करना है। कला समेकित अधिगम शिक्षण मॉडल है जो कला के माध्यम से और कला के साथ सीखने पर आधारित है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो कला शिक्षण का माध्यम बन जाती है। विद्यार्थी विभिन्न कला रूपों के माध्यम से विभिन्न अवधारणाओं के बीच संबंध बनाते समय रचनात्मक रूप से अन्वेषण करते है। कला के अनुभव दोनों दृश्य कला (ड्राइंग, पेटिंग, क्ले मॉडलिंग, विरासत, शिल्प आदि) और प्रदर्शन कला (नृत्य, नाटक, पपेट) बेहतर समझ और निर्माण की ओर ले जाते है। इसी सन्दर्भ में

खान और अली (2016) ने अपने अध्ययन 'ललित कला की शिक्षा का महत्व–एक अवलोकन में पाया कि ललित कलाओं का अध्ययन और उनमें हिस्सा लेना विद्यार्थी के व्यवहार और दृष्टिकोण, दोनों को प्रभावित करता है।' डोना सेंट जॉर्ज, (2015) ने अपने अध्ययन में पाया कि इस समेकित पद्धति (इंटीग्रेटेड अप्रोच) से निर्धन विद्यार्थियों को विशेष लाभ हुआ। शोधकर्ता ने इस बात पर बल दिया है कि कला के समेकन में रूचि विश्व–स्तर पर बढ़ रही है। यह रूचि उन अनुसंधानों के कारण बढ़ रही है जो विद्यार्थियों के शैक्षणिक, सामाजिक और व्यक्तिगत लाभों की ओर संकेत करते है। सामाजिक

विज्ञान के कला के एकीकरण पर जूली एन टेलर, टिमोथी मोक व सना अयूव (2016) द्वारा एक अध्ययन किया गया जिसके अनुसार शिक्षाविद् दृश्य कलाओं व उनके प्रत्ययों का प्रयोग विद्यार्थियों की शिक्षा में रूचि बढ़ाने अर्थपूर्ण परिचर्या व ऐतिहासिक व सांस्कृतिक समझ को बढ़ाने के लिये करते है। बर्जर एवं विन (2010) द्वारा एक अध्ययन सम्पादित किया गया जिसका शीर्षक इन्सट्रक्शन इन विजुअल आर्टः कैन इट हेल्प चिल्ड्रन लर्न टू रीड था। शोध का उद्देश्य दृश्य कला द्वारा किये गये अधिगम अनुभव और छात्रों की धारण योग्यता के मध्य सहसंबंध ज्ञात करना था। परिणाम में पाया कि दृश्य कला द्वारा दिये गये अधिगम अनुभव और छात्रों की धारण योग्यता के मध्य सकारात्मक सम्बन्ध पाया गया। हरन (1998) ने अपने लघु शोध प्रबंध में आर्टोग्राफी का प्रयोग करके मौलिक कविताओं दृश्य चित्रों और कहानियों के माध्यम से भूगोल पाठ्यक्रम को उन्नत करने का प्रयास किया। बर्टेण्ड निकोल (1975) ने अध्ययन में पाया कि ड्रामा इन हिस्ट्रीक्लासरूम केवल मनोरंजन के लिये नही है, बल्कि ऐतिहासिक चरित्रों को चलाने के लिए सहानुभूति को प्रोत्साहित करने जागरूकता लाने के रूप में मूल्यवान है। शुबर्ट और मेलनिक (1991) ने नागरिक शास्त्र, अंग्रेजी, इतिहास और भूगोल कक्षाओं के भीतर दृश्य, प्रदर्शन और संगीत कला को एकीकृत करते हुए छात्रों पर प्रभाव का अध्ययन किया एवं परिणाम में पाया कि छात्रों ने विभिन्न विषय क्षेत्रों में सहसम्बन्ध बनाए। एकीकृत पाठ्यक्रम ने स्कूल के प्रति छात्रों के दृष्टिकोण को बढ़ाया और उनके आत्मविश्वास को बढ़ाया। लिटिलडाइक (2004) ने प्राथमिक विज्ञान की अर्थपूर्ण शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए नाटक के उपयोग पर शोध किया। परिणाम से पता चला कि नाटक विज्ञान में अवधारणाओं को समझने संचार और विचारों को व्यक्त करने में कौशल विकसित करने में मद्द करने का एक उत्कृष्ट माध्यम था। कला समेकित अधिगम क्रियाओं द्वारा विद्यार्थियों के तीनों स्तर (ज्ञानात्मक, भावात्मक तथा मनोगत्यात्मक) का विकास संभव हो पाता है। कलाएँ किसी भी कल्पना और विचारों को अभिव्यक्त के करने लिए प्राकृतिक माध्यम है। सी.बी.एस.ई. द्वारा जारी सर्कुलर (2019) के अनुसार "आर्ट इंटीग्रेटेड लर्निंग क्लासरूम को आनंदमय और रचनात्मक बनाता है। यह हमारी समृद्ध कला और सांस्कृतिक विरासत की सराहना को भी बढ़ाता देता है। सी.बी. एस.ई. ने कक्षा 1 से 12 तक सभी शैक्षणिक विषयों की शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया के साथ कला को एकीकृत करने का फैसला किया है।"

सेंट जार्जडोना (2015) सेंटमोर स्कूल्स वर्किंग टु इंटीग्रेट्स आर्टस इन क्लासरूम का उपयोग किया जाए तो इससे गणित और अंग्रेजी की परीक्षाओं में प्राप्त अंकों में सुधार होता है।

अरोरा ए. व अन्य (2013) कला समेकित शिक्षण का विद्यालय गतिविधियों पर प्रभाव का अध्ययन : कला समेकित शिक्षण के प्रभाव स्वरूप कला समेकित शिक्षा प्रशिक्षित लाभार्थियों की अवधारण पाठ्यक्रम प्रबंधन, विद्यार्थी केन्द्रित कक्षा व विद्यार्थियों के समग्र विकास के सन्दर्भ में सकारात्मक थी।

बोइलिट (2010) ने अपने अध्ययन 'हाउ द आर्ट्स हेल्प चिल्ड्रन टू क्रिएट हेल्दी सोशल स्क्रिप्ट : एक्सप्लोरिंग द परसेप्सन ऑफ एलीमेंटरी टीचर्स ने नृत्य व नाट्यकला के माध्यम से विद्यार्थियों में सामाजिक, संवेगात्मक अभिरूचियों को जानने का प्रयास किया। शोध के परिणामों में पाया गया कि

कक्षागत शिक्षण में कलाओं की परम्परागत विधाएं विशेष रूप से नृत्य और नाटक के द्वारा दिए गये शिक्षण न केवल प्रभावशाली होते हैं, बल्कि सामाजिक, संवेगात्मक अभिरूचियों को बढ़ाने में भी सहायक होते हैं।

एन्ड्रल एवं शिमिथ (2014) ने अपने अध्ययन 'स्टूडेन्ट्स परसेप्शन ऑफ सक्सेस इन आर्ट क्लासरूम' में यह जानने का प्रयास किया कि कला शिक्षण का विद्यार्थियों के प्रत्यक्षीकरण पर क्या प्रभाव होता है? परिणाम में यह पाया गया कि कला कार्यों में पूर्णता को विद्यार्थियों ने सफलता के रूप में प्रत्यक्षीकृत किया है।

बर्जर एवं विनर (2010) द्वारा एक अध्ययन सम्पादित किया गया जिसका शीर्षक 'इन्सट्रक्शन इन विजुअल आर्ट : कैन इट हेल्प चिल्ड्रन लर्न टू रीड' था। शोध का उद्देश्य दृश्य कला द्वारा दिये गये अधिगम अनुभव छात्रों की पठन योग्यता के मध्य सहसंबंध को ज्ञात करना था। परिणामों से यह ज्ञात होता है कि दृश्य कला द्वारा दिये गये अनुदेशन अधिगम स्थानान्तरण में प्रभावी होते हैं। सोंग (2018) ने अपने अध्ययन 'फोस्टरिंग कल्चरली रेस्पोन्सिव स्कूल : स्टूडेन्ट आइडेन्टिटी डेवलपमेंट इन क्रॉस कल्चरल क्लासरूम' परिणाम में पाया गया कि कक्षागत शिक्षण के अन्तर्गत बहुसाँस्कृतिक शिक्षा प्रदान करने में कला शिक्षा द्वारा रचित शैक्षणिक क्रियाकलाप अत्यंत सफल सिद्ध होते हैं।

उपर्युक्त अध्ययनों के अवलोकन से शोधकत्री को यह ज्ञात हुआ कि कला समेकित अधिगम एक प्रभावी रणनीति है जिसका प्रयोग माध्यमिक स्तर पर करके छात्रों को अर्थपूर्ण अधिगम के लिये रचनात्मक वातावरण प्रदान किया जा सकता है। माध्यमिक स्तर पर बालकों का अवबोध स्तर विकसित होता है तथा विषय के प्रति समझ विकसित होती है। इस स्तर पर कला शिक्षा को ऐसे सभी विषयों से जोड़ना होगा जो शिक्षण अधिगम अवधारणाओं का एक उपकरण बन जाए। कला बच्चे की जिज्ञासा व कल्पना की भावना को मजबूत करने में एक प्रभावी भूमिका निभा सकती है। अतः माध्यमिक स्तर पर कला समेकित अधिगम क्रियाएँ किस प्रकार ज्ञान प्राप्ति, अवधारण, रूपातरण करके शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि करती है तथा इसके माध्यम से किस प्रकार छात्रों में इतिहास विषय के प्रति रूचि उत्पन्न की जा सकती है एवं यह विद्यार्थियों की अभिवृत्ति तथा अवधारण क्षमता को विकसित करने में सहायक है। उक्त प्रश्न शोधकत्री के मस्तिष्क में आए और इन प्रश्नों के समाधान हेतु शोधकत्री ने प्रस्तुत शोध समस्या "कला समेकित अधिगम क्रियाओं द्वारा इतिहास शिक्षण का माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की रूचि, अभिवृत्ति एवं अवधारण पर प्रभाव का अध्ययन" का चयन किया।

अध्ययन का औचित्य

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या (2005) में स्पष्ट किया गया है कि शिक्षण का उद्देश्य सीखने की सहज इच्छा और युक्तियों को समृद्ध करना होता है। मात्र सूचना देना नहीं। ज्ञान को सूचना से अलग होना चाहिए। सक्रिय गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों में नैसर्गिक विकास के अवसर प्रदान करने चाहिए। परन्तु पारंपरिक शिक्षण संस्थाएं और उसकी विधियाँ प्रायः बालकों के नैसर्गिक विकास में असफल सिद्ध हो रहे हैं।

कला बहुत गहरे तक मानवीय इतिहास और इसके विकास के साथ जुड़ी है। शिक्षाविद ही नहीं वरन् मनोवैज्ञानिक, न्यूरोसाइंटिस्ट तथा विकासवादी सभी यह मानते हैं कि कला मनुष्य के सामाजिक संवेगात्मक व संज्ञानात्मक विकास में महत्वपूर्ण कार्य करती है। बालकेन्द्रित शिक्षा में ज्ञान, अवबोध, कुशलता तथा अभिरूचि एवं अभिवृत्ति सम्बन्धी उद्देश्यों की पूर्ति तथा बालकों में तद्नुकूल व्यवहारगत परिवर्तन लाना अभीष्ट है। इसके लिए कुशल अध्यापक की आवश्यकता होती है। इतिहास शिक्षक में भूतकाल तथा वर्तमान में जोड़ने की क्षमता होती है।

सियोल एजेंडा, (2010) की प्रस्तावना इस बात पर बल देती है। "आज के संसार में जहाँ एक ओर प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति हो रही है, वहीं दूसरी ओर असाध्य सामाजिक और सांस्कृतिक अन्याय भी रहा है। तेजी से बदलती इस दुनिया में विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए शिक्षा–व्यवस्था संघर्ष कर रही है। इस शिक्षा–व्यवस्था के रचनात्मक परिवर्तन में कला शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है।"

शिक्षण का उद्देश्य सीखने की सहज इच्छा और युक्तियों को समृद्ध करना होता है। मात्र सूचना देना नहीं। सक्रिय गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों में इतिहास विषय की समझ के अवसर प्रदान करने चाहिए। परंतु पारंपरिक शिक्षण संस्थाएँ और उसकी विधियाँ या पाठ्यक्रम प्रायः बालकों के विषय की समझ विकसित करने में असफल सिद्ध हो रहे हैं। वर्तमान परिदृश्य में सीखने की परिस्थितियाँ अधिक जटिल है। आइजनर (1994) तथा इफलैण्ड (2002)। कला अधिगम शिक्षण पर 2012 दिसंबर में कला एवं सौन्दर्यशास्त्र विभाग और एनसीईआरटी द्वारा राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसका उद्देश्य कला समेकित अधिगम के अभ्यासकर्ताओं को एक साझा मंच प्रदान करना था। जहाँ वह अपने कक्षा सम्बन्धी अनुभव, विस्तृत अध्ययन और इस शिक्षण शास्त्र का बच्चों और शिक्षकों पर प्रभाव की चर्चा कर सकें।" माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में प्रायः इतिहास विषय को लेकर उनकी मनोवृत्ति अच्छी नहीं होती और न ही वे उस विषय के प्रति रूचि प्रदर्शित करते है। वे इतिहास विषय को समझने की बजाए उसे रटने की कोशिश करते है और जिससे उनकी अवधारण क्षमता भी उतनी उत्तम नहीं होती है। अतः शोधार्थी के मस्तिष्क में यह विचारणीय प्रश्न उठते हैं कि –

- क्या कला समेकित अधिगम के द्वारा इतिहास विषय को रूचिकर बनाया जा सकता है?
- क्या दृश्य कला व प्रदर्शन कला के द्वारा विद्यार्थियों की इतिहास विषय के प्रति मनोवृत्ति में परिवर्तन किया जा सकता है?
- क्या कला समेकित अधिगम के द्वारा विद्यार्थियों की अवधारण क्षमता इतिहास विषय के प्रति बढ़ायी जा सकती है?
- क्या छात्र व छात्राओं में इतिहास विषय के प्रति रूचि, मनोवृत्ति व अवधारण में अन्तर होता है?

इन अनुत्तरित प्रश्नों के उत्तर जानने के लिए निम्न अध्ययन विषय को शोध समस्या के रूप में चयनित किया गया है।

समस्या कथन

"कला समेकित अधिगम द्वारा इतिहास शिक्षण का माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की रूचि, अभिवृत्ति एवं अवधारण पर प्रभाव का अध्ययन।"

अध्ययन में प्रयुक्त पदों की व्याख्या

माध्यमिक स्तर :– माध्यमिक स्तर से तात्पर्य मान्यता प्राप्त उन शैक्षिक संस्थाओं से है जहाँ कक्षा 9 से 10 तक की कक्षाएँ संचालित होती है।

विद्यार्थी :– विद्यार्थी शब्द से तात्पर्य मान्यता प्राप्त विद्यालयों में कक्षा 9 एवं 10 में अध्ययनरत विद्यार्थियों से है जिनकी आयु लगभग 13–16 वर्ष तक होती है।

कार्यात्मक परिभाषा – प्रस्तुत अध्ययन में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों से तात्पर्य कक्षा 9 के विद्यार्थियों को सम्मिलित करने से है।

कला समेकित अधिगम

टॉल्सटॉय के अनुसार :– "यदि अपने भावों को क्रिया, वर्ग, रेखा, ध्वनि, अथवा शब्द द्वारा इस प्रकार से अभिव्यक्त किया जाये कि उसके देखने से अथवा सुनने के द्वारा कलाकार के मन में भाव जाग्रत हो जायें तो उसको कला के नाम से सम्बोधित किया जायेगा।"

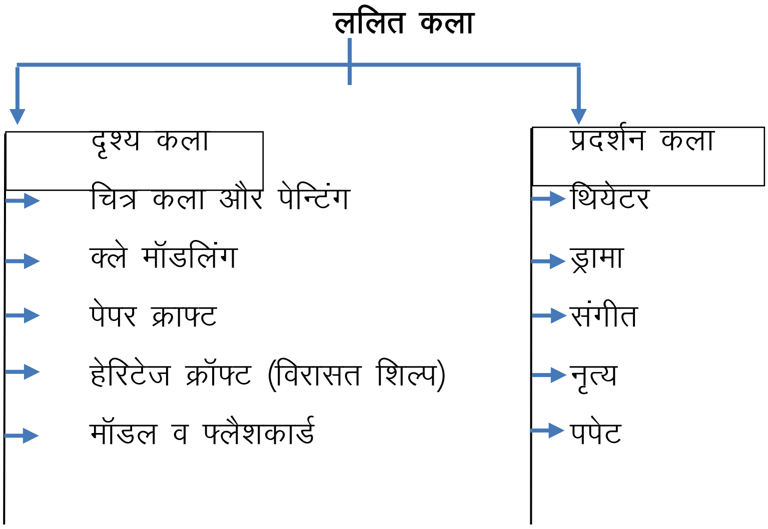

चित्र नं 2: ललित कला के प्रकार

कार्यात्मक परिभाषा

प्रस्तुत शोध में कला समेकित अधिगम क्रियाओं से तात्पर्य इतिहास विषय के सम्प्रत्ययों को समझाने हेतु प्रयुक्त प्रदर्शन कला के अन्तर्गत कठपुतली कला (धागा कठपुतली, छाया कठपुतली, दस्ताना कठपुतली, छड़ कठपुतली) का प्रयोग किया जायेगा।

अभिवृत्ति

आलपोर्ट (1935) के अनुसार :– "अभिवृत्ति मानसिक तथा स्नायुविक तत्परता की एक स्थिति है, जो अनुभव द्वारा निर्धारित होती है और जो उन समस्त वस्तुओं तथा परिस्थितियों के प्रति हमारी प्रतिक्रियाओं को प्रेरित व निर्देशित करती है, जिनसे कि वह अभिवृत्ति सम्बन्धित है।"

कार्यात्मक परिभाषा

प्रस्तुत शोध में अभिवृत्ति से तात्पर्य कला समेकित अधिगम क्रियाओं के द्वारा इतिहास विषय के प्रति विद्यार्थियों में अभिवृत्ति का आंकलन करने से है जिसके आयाम निम्नवत् हैं –

1. सुगमता
2. उभयमुखिता
3. अनुकूलन
4. भावप्रबलता
5. व्यापकता

रूचि – रिली (1990) के अनुसार :– "अभिरूचि बालकों में एक प्रेरणात्मक बल के रूप में कार्य करता है जिसके परिणामस्वरूप वह किसी वस्तु को अन्य वस्तुओं से अलग कर उस पर विशेष ध्यान देता है।"

कार्यात्मक परिभाषा – प्रस्तुत शोध में रूचि से तात्पर्य कला समेकित अधिगम क्रियाओं के द्वारा इतिहास विषय के प्रति रूचि का आंकलन किया जायेगा। जिसके आयाम निम्नवत् हैं –

1. ज्ञान
2. सकारात्मक भाव
3. व्यक्तिगत मूल्य

अवधारण – वुडवर्थ के अनुसार :– (1972) "अवधारण वह शक्ति है जिसमें सीखी गयी बातें पुनः सक्रिय होने तक निष्क्रिय पड़ी रहती है।"

कार्यात्मक परिभाषा :– प्रस्तुत शोध में अवधारण से तात्पर्य कला समेकित अधिगम क्रियाओं द्वारा इतिहास विषय के प्रति विद्यार्थियों में अवधारणा का आंकलन करने से है जिसके आयाम निम्नवत् हैं –

1. नामांकन
2. ज्ञान
3. हस्तक्षेप
4. पुर्नसंयोजन
5. संगठन
6. वचनबद्धता

शोध अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध में निम्नांकित उद्देश्य निर्धारित किये गये हैः

1. इतिहास शिक्षण में कला समेकित अधिगम का विद्यार्थियों के इतिहास विषय में रूचि पर प्रभाव का अध्ययन करना।
2. इतिहास शिक्षण में कला समेकित अधिगम का विद्यार्थियों के इतिहास विषय में अभिवृत्ति पर प्रभाव का अध्ययन करना।

3. इतिहास शिक्षण में कला समेकित अधिगम का विद्यार्थियों के इतिहास विषय में अवधारण पर प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पना

अध्ययन के उद्देश्यों के अनुरूप निम्नांकित परिकल्पनाएँ निरूपित की गयी हैः

- इतिहास शिक्षण में कला समेकित अधिगम का विद्यार्थियों के इतिहास विषय में रूचि पर प्रभाव पड़ता है।
- इतिहास शिक्षण में कला समेकित अधिगम का विद्यार्थियों के इतिहास विषय में अभिवृत्ति पर प्रभाव पड़ता है।
- इतिहस शिक्षण में कला समेकित अधिगम का विद्यार्थियों के इतिहास विषय में अवधारण पर प्रभाव पड़ता है।

अध्ययन का परिसीमांकन

अध्ययन का निम्न प्रकार परिसीमांकन किया जायेगा –

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन आगरा मण्डल के यू0पी0 बोर्ड विद्यालय तक ही सीमित रखा जायेगा।
2. प्रस्तुत शोध अध्ययन केवल माध्यमिक विद्यालय की कक्षा 9 के विद्यार्थियों तक सीमित रखा जायेगा।

अध्ययन के चर

स्वतन्त्र चर – कला समेकित अधिगम।

आश्रित चर – अभिवृत्ति, रूचि, अवधारण।

नियन्त्रित चर –आयु, लिंग, विद्यालय, विषय, शिक्षण अवधि आदि।

तालिका नं 1.1: चर को नियंत्रित करने की विधियॉ

चर	**चरों को नियंत्रित करने की विधियाँ**
आयु	13–16 वर्ष के छात्र–छात्राएँ (कक्षा 9)
लिंग	छात्र व छात्रा दोनों
विद्यालय	यू0पी0 बोर्ड का विद्यालय
अध्ययन विषय	इतिहास विषय
शिक्षण अवधि	60 मिनट

अध्ययन की विधि

शोध अध्ययन की विधि के रूप में प्रयोगात्मक विधि का प्रयोग किया जायेगा। इस शोध अध्ययन में विद्यालय एवं कक्षा का चयन सोद्देश्य विधि से किया जायेगा। प्रयोगात्मक समूह तथा नियंत्रित समूह का चयन यादृच्छिक विधि से किया जायेगा। नियंत्रित समूह के अन्तर्गत कुछ चरों जैसे– आयु, लिंग, विद्यालय, विषय, शिक्षण अवधि के आधार पर दोनों समूहों को नियंत्रित किया जायेगा।

अध्ययन की प्रक्रिया

प्रस्तुत शोधकार्य में पूर्व परीक्षण एवं पश्च परीक्षण द्विसमूह अभिकल्प का प्रयोग किया जायेगा। सर्वप्रथम दोनों समूह (प्रयोगात्मक समूह तथा नियन्त्रित समूह) को यादृच्छिक विधि द्वारा चयनित किया जायेगा। सम्पूर्ण न्यादर्श को समूहों (नियन्त्रित समूह तथा प्रयोगात्मक समूह) में रखा जायेगा। दोनों समूहों पर पूर्व परीक्षण के अन्तर्गत आश्रित चरों (रूचि, अभिवृत्ति तथा अवधारण) के परीक्षण का क्रियान्वयन किया जायेगा। तत्पश्चात् प्रयोगात्मक समूह को मॉड्यूल द्वारा तथा नियियन्त्रित समूह को परम्परागत शिक्षण विधि से अध्ययन कराया जायेगा तथा अन्त में पश्च परीक्षण के अन्तर्गत एक बार पुनः आश्रित चरों (रूचि, अभिवृत्ति तथा अवधारण) का उपयुक्त परीक्षण द्वारा आंकलन किया जायेगा। इसकी रूपरेखा निम्नवत् है—

तालिका 1.2: अध्ययन का संरचनात्मक प्रारूप

<table>
<tr><th rowspan="2">क्र सं</th><th rowspan="2">समूह</th><th rowspan="2">पूर्व परीक्षण</th><th rowspan="2">उपचार</th><th colspan="2">अवधि</th><th rowspan="2">पश्च परीक्षण</th></tr>
<tr><th>चक्र अवधि</th><th>सम्पूर्ण अवधि</th></tr>
<tr><td>1</td><td>प्रयोगात्मक समूह</td><td rowspan="2">रूचि, अभिवृत्ति तथा अवधारण परीक्षण का प्रयोग किया जायेगा।</td><td>कला समेकित अधिगम से सम्बन्धित मॉड्यूल का प्रयोग किया जायेगा।</td><td>60 मिनट</td><td>25 कार्य दिवस</td><td rowspan="2">रूचि, अभिवृत्ति, तथा अवधारण परीक्षण का प्रयोग किया जायेगा।</td></tr>
<tr><td>2</td><td>नियन्त्रित समूह</td><td colspan="3">परम्परागत शिक्षण विधि का प्रयोग किया जायेगा।</td></tr>
</table>

अध्ययन न्यादर्श

कक्षा व विद्यालय चयन के सोद्देश्य न्यादर्श विधि का प्रयोग किया जायेगा।

न्यादर्श के लिए 100 विद्यार्थियों का चयन किया जायेगा जिसमें दो वर्ग (प्रयोगात्मक व नियंत्रित समूह) में 50—50 विद्यार्थियों के चयन हेतु यादृच्छिक चयन न्यादर्श विधि का प्रयोग किया जायेगा।

तालिका 1.3: न्यादर्श तालिका

विद्यालय	कक्षा	विषय	प्रयोगात्मक समूह	नियंत्रित समूह
माध्यमिक विद्यालय का चयन सोद्देश्य विधि द्वारा किया जायेगा	9	इतिहास विषय	50 विद्यार्थी	50 विद्यार्थी

प्रयोगात्मक विधि की रूपरेखा

योजना चरण — कला समेकित अधिगम क्रियाओं से सम्बन्धित मॉड्यूल का निर्माण शोधार्थिनी द्वारा विशेषज्ञ के मार्गदर्शन में पूर्ण किया जायेगा जो विद्यार्थियों के इतिहास विषय के प्रति अभिवृत्ति, रूचि तथा अवधारण क्षमता को बढ़ा सकें।

कक्षागत प्रयोग — प्रारूप की योजना बना लेने के पश्चात् प्रयोगात्मक विधि के माध्यम से शोध पूर्ण किया जायेगा। शोधार्थिनी द्वारा यादृच्छिकरण विधि से न्यादर्श का चयन करके समूह पर प्रयोग

किया जायेगा। समूह पर पूर्व परीक्षण प्रशासित किया जायेगा। तदुपरांत कला समेकित अधिगम क्रियाओं से सम्बन्धित इतिहास विषय के मॉड्यूल का प्रयोगात्मक समूह पर अध्ययन करेंगे। अन्त में पश्च परीक्षण प्रशासित करके अध्ययन को पूर्णतः प्रदान की जायेगी।

मूल्यांकन चरण – कला समेकित अधिगम क्रियाओं की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करने के लिए पूर्व व पश्च परीक्षण से प्राप्त परिणामों की उपयुक्त सांख्यिकी विधियों के माध्यम से परस्पर तुलना कर ली जायेगी।

अध्ययन के उपकरण

रूचि, अभिवृत्ति तथा अवधारण के मापन हेतु शोधार्थिनी द्वारा स्वयं निर्मित परीक्षण का प्रयोग किया जायेगा।

सांख्यिकीय विधियाँ

प्रस्तुत शोध कार्य के प्राप्त आंकड़ों को निम्न सांख्यिकीय प्रविधियों द्वारा विश्लेषित किया जायेगा–

वर्णनात्मक सांख्यिकी – मध्यमान, मानक विचलन,

निष्कर्षात्मक सांख्यिकी– टी परीक्षण।

अध्ययन की उपयोगिता

कला समेकित अधिगम के द्वारा विद्यार्थियों का इतिहास विषय के प्रति रूचि, मनोवृत्ति तथा अवधारण में उपयोगिता निम्नवत् है–

- कला समेकित अधिगम क्रियाओं द्वारा विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक, भावनात्मक और मनोगत्यात्मक ज्ञानक्षेत्रों का विकास करना संभव हो पायेगा।
- यह अध्ययन शिक्षाविदों के लिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि इतिहास विषय को कला समेकित अधिगम क्रियाओं के साथ सम्बन्धित करके विषय को रूचिकर बनाया जा सकता है।
- प्रस्तुत अध्ययन उत्पाद की उपेक्षा प्रक्रिया के अनुभव को बढ़ावा देता है। इससे शैक्षिक सामग्री के अनुभावात्मक अधिगम तथा अन्तः विषयी सम्बन्धों को समझने में सहायता मिलेगी।
- प्रस्तुत अध्ययन द्वारा दृश्यकला व प्रदर्शन कला के माडॅयूल जो इस अनुसंधान में शोधकर्त्री द्वारा निर्मित किये जायेगें, का प्रयोग इतिहास शिक्षण में किया जा सकेगा।
- कला समेकित अधिगम क्रियाओं द्वारा विद्यार्थियों से संज्ञानात्मक विकास से भावात्मक विकास किस प्रकार हो सकता है, यह समझने में सहायता मिलेगी।
- वर्तमान शिक्षण संस्थाएं इतिहास विषय को एक नीरस विषय के रूप में देखते है। कला माध्यम द्वारा विषय को रूचिकर बनाने में सहायता मिलेगी।

- विषय एवं प्रसंग का ज्ञानअर्जन एवं विषयों में आपसी सम्बन्धों के बारे में जागरूकता उत्पन्न की जा सकेगी।
- इतिहास विषय में विद्यार्थियों में रूचि, मनोवृत्ति को जान सकेंगे तथा अवधारण की क्षमता विकसित हो सकेगी।

अतः प्रस्तुत शोध अध्ययन शिक्षा जगत में नवीन विधियों, प्रविधियों को खोजने का एक विकासात्मक चरण है। अतः अध्ययन के माध्यम से इस तथ्य का भी पता लगाया जा सकता है कि वर्तमान पीढ़ी में इतिहास विषय के प्रति जो अरूचि है उसमें कला समेकित अधिगम क्रियाएं क्या भूमिका निर्वाह करती है एवं रूचि, अभिवृत्ति, अवधारण के विकास में सहायक सिद्ध हो सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

एन्ड्रल, एच.एण्ड शिमिथ, आर. (2014). स्टूडेन्ट्स परसेप्शन ऑफ सक्सेन इन आर्ट क्लासरूम इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ ऐजुकेशन एण्ड द आर्टस, 15 (3) Retrieved from http://www.ijea.org/v15n13/.

अरोरा, ए. एल. (2012). ट्रेनिंग पैकेज फॉर आर्ट इंटीग्रेटेड फॉर प्राइमरी टीचर एन.सी.ई.आर.टी. नयी दिल्लीः राजेन्द्र नगर, जामिया इस्लामिया।

ऑलपोर्ट, जी. (1935). एटीटियडस, इन ए हैण्डबुक ऑफ सोशल साइकोलॉजी, ed.c. marchison.worcester, MA. clark university press, 789-844.

बुम्बेट, एल. (2013). एनहासिंग सेल्फ कॉन्सेप्ट थ्रू एन इन्टिग्रेटिड आर्ट प्रोजेक्ट इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन ऑफ आर्ट, 222–248।

बोइलिट, एल. (2010) हाउ द आर्टस चिल्ड्रन टू क्रिएट हेल्दी सोशल स्क्रिप्ट : एक्सप्लोरिंग द परसेप्सन ऑफ एलीमेन्ट्री टीचर्स. आर्टस एजुकेशन पॉलिसी रिव्यु, 111 (1), 16–24।

बर्जर, के. एवं निवर, ई. (2000). इन्सट्रक्शन इन विजुअल आर्ट : कैन इट हेल्प चिल्ड्रेन लर्न टू रीड? जर्नल ऑफ असेटिक एजुकेशन. 34 (3/4), 277–293।

द सिओल एजेंडा. (2010). गोल्स फॉर डेव्लवमेंट ऑफ आर्ट्स एजुकेशन, द सेकेण्ड वर्ल्ड कोंफेरेंस ऑफ आर्ट एजुकेशन सिओल. नई दिल्लीः राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद।

हॉनर, हग.एफ.जे. (2006). द विजुअल हिस्ट्री ऑफ आर्ट. अबराम्स पब्लिशर एन.वाई प्रेस।

नोनोरी, एम. (2012). द आर्ट्स अनलॉक द डोर टु लर्निंग. एजुटोपिया जार्ज्ज लूकस फाउंडेशन ऑफ एजुकेशन।

हरन. (1998). लाइन डांसिग, एन एटसल ऑफ जियोग्राफी करीकुलम एंड पेंटिग पॉसिबिलिटस अनपब्लिश्ड़ डॉक्टोरल डिजरटेशन, यूनिवर्सटी ऑफ कॉललिया।

खान, एम.एम. (2016). द इंपोर्टेन्स ऑफ फाइन आर्टस एजुकेशन एन ओवरविव्यू. जनरल ऑफ

रिसर्च इन हयूमनिटीज एण्ड सोशल साइंस वाल्यूम (4) ।

प्रसाद, डी. (1998). आर्टस बेसिस ऑफ एजुकेशन. नेशनल बुक ट्रस्ट।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा. (2005). एन.सी.ई.आर.टी प्रकाशन कार्यालय नयी दिल्ली।

सुधीर, पं. (2019). कला समेकित अधिगम, नई दिल्लीः राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद।

सोंग, वाई.आई.के. (2018). मोस्टरिंग कल्चरली टेस्पोसिव स्कूल : स्टूडेन्ट आइडेन्टिी इन क्रॉस कल्चरल क्लासरूम, इण्टनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एण्ड द आटर्स : 19 (3) Retrieved from https://dai.org/10.18113/p8ijea1903A

सेंट जे, डी. (2015). सेंटमोर स्कूल्स वर्किंग टू इंटीग्रेट्स आर्टस इनक्लासरूम, वाशिंगटन पोस्ट।

सिंह, ए.के. (2015). उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान. नई दिल्लीः मोतीलाल बनारसी दास।

साखलकर, र. वि. (2014). आधुनिक चित्रकला कला का इतिहास. राजस्थानः हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।

स्टीन, एस. एंड एल. (2010). आर्टस इंट्रीगेशन–आर्टस इंट्रीगेशन फ्रेमवर्क, कैनेडी सेंटर Retrived from www.artrintegratipd.org/art

शर्मा, आर.ए. (2008). आर्ट प्रेक्टि्स एज रिसर्चः इंक्वायरी इनद विजुअल आर्ट. थाउजेंडओर, CA : सेज पब्लिकेशन्स।

सिंह, वाई. के. (2004). इतिहास शिक्षण. नई दिल्ली : APH पब्लिसिंग कॉरपोरेशन।

शर्मा, आर.ए. (1985). फंडामेंटल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च. मेरठ : लॉयल डिपो।

थॉर्नडाइक, ई.एल. (1935) एटीट्यूड, इन ए हैण्डबुक ऑफ सोशल साइकालॉजी. न्यूयार्कः मैकमिलन।

वर्मा, ए. बी. (1996). भारतीय चित्रकला का इतिहास. बरेलीः प्रकाश बुक डिपो।

वुडवर्थ, (1972) एक्सपेरीमेन्टी साइकोलॉजी लंदन, मेथियुन।